उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड

23, एलनगंज, प्रयागराज–211002

पाठ्यक्रम–प्रवक्ता

समाजशास्त्र (16)

समाज शास्त्र का अर्थ विषयवस्तु, क्षेत्र, समाजशास्त्र की उत्पत्ति एवं विकास, समाज शास्त्र का अन्य समाज विज्ञानों के साथ सम्बन्ध, – समाजशासत्र के पाश्चात्य विचारक, आगस्त कांट, हरर्बट स्पेन्सर, इमाइल दुर्खीम एवं मैक्स वेबर, भारतीय विचारक– श्री अरविन्दों, गांधी, राधाकमल मुकर्जी, भगवानदास, समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों की अद्यतन प्रवृत्तियों अन्तः प्रवृत्तियां प्रकार्यवाद, संघर्ष का सिद्धान्त, सामाजिक विनमय का सिद्धान्त, प्रतीकात्मक अन्तः क्रियावाद, प्रघटनाशास्त्र, प्रमुख सामाजिक संस्थाएं– परिवार, विवाह, धर्म प्रमुख सामाजिक प्रक्रियाएं : सहायोग, संघर्ष, प्राथमिक अवधारणाएं–सामाजिक समूह, समिति, संस्था, समुदाय सामाजिक स्तरीकरीण, भौगोलिक पर्यावरण एवं मानव समाज–संस्कृति एवं व्यक्तित्व, समाजीकरण, सामजिक नियंत्रण, सामजिक परिवर्तन हिन्दू समाजिक संगठन–वर्णाश्रम, धर्म, पुरूषार्थ, संस्कार, कर्म का सिद्धान्त, हिन्दू विवाह एवं संयुक्त परिवार, मुसलमानों में विवाह एवं परिवार, जाति व्यवस्था, जजमानी व्यवस्था, नातेदार संगठन, अनूसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़े वर्ग से सम्बन्धत समस्याएं, भारतीय स्त्रियां एवं उनसे सम्बन्धित समस्याएं। ग्रामीण परिवर्तन एवं विकास– समेकित ग्रामीण विकास कार्यक्रम एवं पंचायती राज, पाश्चात्यीकरण, संस्कृतिकरण, स्थानीयकरण, सार्वभौमिकरण, धर्मनिरपेक्षीकरण, भारतीय समाज का आधुनिकीकरण, संरचना गतिशीलता, उद्यमिता, औद्यौगीकरण, एवं विकास उत्प्रवास एवं नगरीकरण, नगरीकरण की समस्याएं, भारतीय नगरीय/नीति भूमि एवं कृषि सुधार, सामाजिक स्तरीकरण एवं परिवर्तन–जाति एवं वर्ग, ग्रामीण शक्ति संरचना एवं उभरता नेतृत्व, सामाजिक विघटन की अवधारणा, वैयक्तिक विघटन एवं परिवारों विघटन, अपराध एवं बाल अपराध, श्वेतवसन अपराध, कारण एवं सुधार के उपाय, सामाजिक समस्याएं, बेकारी, निर्धनता, मद्यपान एवं मादक द्रव्यव्यसन, वेश्यावृत्ति, भिक्षावृत्ति, जनसंख्या की समस्या, समाज कल्याण कार्यक्रम।